हिंदी मातृभाषा (कोड 002)

कक्षा 9वीं (2020-21)

माध्यमिक स्तर तक आते-आते विद्यार्थी किशोर हो चुका होता है और उसमें सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने के साथ-साथ आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होने लगती है। भाषा के सौंदर्यात्मक पक्ष, कथात्मकता/गीतात्मकता, अखबारी समझ, शब्द शक्तियों कीसमझ, राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना का विकास, स्वयं की अस्मिता का संदर्भ और आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त भाषा- प्रयोग, शब्दों का सुचिंतित प्रयोग, भाषा की नियमबद्ध प्रकृति आदि से विद्यार्थी परिचित हो जाता है। इतना ही नहीं वह विविध विधाओं और अभिव्यक्ति की अनेक शैलियों से भी परिचित हो चुका होता है। अब विद्यार्थी की दृष्टि आस-पड़ोस, राज्य-देश की सीमा को लांघते हुए वैश्विक क्षितिज तक फैल जाती है। इन बच्चों की दुनिया में समाचार, खेल, फिल्म तथा अन्य कलाओं के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाएँ और अलग-अलग तरह की किताबें भी प्रवेश पा चुकी होती हैं।

इस स्तर पर मातृभाषा हिंदी का अध्ययन साहित्यिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक भाषा के रूप में कुछ इस तरह से हो कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पहुँचते-पहुँचते यह विद्यार्थियों की पहचान, आत्मविश्वास और विमर्श की भाषा बन सके। प्रयास यह भी होगा कि विद्यार्थी भाषा के लिखित प्रयोग के साथ-साथ सहज और स्वाभाविक मौखिक अभिव्यक्ति में भी सक्षम हो सके।

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से -

(क) विद्यार्थी अगले स्तरों पर अपनी रूचि और आवश्यकता के अनुरूप हिंदी की पढ़ाई कर सकेंगे तथा हिंदीमें बोलने और लिखने में सक्षम हो सकेंगे।

(ख) अपनी भाषा दक्षता के चलते उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, समाज विज्ञान और अन्य पाठ्यक्रमों के साथ सहज संबद्धता (अंतर्संबंध) स्थापित कर सकेंगे।

(ग) दैनिक जीवन व्यवहार के विविध क्षेत्रों में हिन्दी के औपचारिक/अनौपचारिक उपयोग की दक्षता हासिल कर सकेंगे।

(घ) भाषा प्रयोग के परंपरागत तौर-तरीकों एवं विधाओं की जानकारी एवं उनके समसामयिक संदर्भों की समझ विकसित कर सकेंगे।

(ड.) हिंदी भाषा में दक्षता का इस्तेमाल वे अन्य भाषा-संरचनाओं की समझ विकसित करने के लिए करसकेंगे।

कक्षा 9वीं व 10वीं में मातृभाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण के उद्देश्य :

- कक्षा आठवीं तक अर्जित भाषिक कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना) का उत्तरोत्तर विकास।
- सृजनात्मक साहित्य के आलोचनात्मक आस्वाद की क्षमता का विकास।
- स्वतंत्र और मौखिक रूप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का विकास।
- ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना।

- साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं (राष्ट्रीयता, धर्म, लिंग एवं भाषा) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास।
- जाति, धर्म, लिंग, राष्ट्रीयता, क्षेत्र आदि से संबंधित पूर्वाग्रहों के चलते बनी रूढ़ियों की भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सजगता।
- भारतीय भाषाओं एवं विदेशी भाषाओं की संस्कृतिकविविधता से परिचय।
- व्यावहारिक और दैनिक जीवन में विविध अभिव्यक्तियों की मौखिक व लिखित क्षमता का विकास।
- संचार माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से अवगतकराना और नवीन भाषा प्रयोग करने कीक्षमता से परिचय।
- विश्लेषण और तर्क क्षमता का विकास।
- भावभिव्यक्ति क्षमताओं का उत्तरोत्तर विकास।
- मतभेद, विरोध और टकराव की परिस्थितियों में भी भाषा को संवेदनशील और तर्कपूर्ण इस्तेमाल से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का विकास।
- भाषा की समावेशी और बहुभाषिक प्रकृति की समझ का विकासकरना।

शिक्षण युक्तियाँ

माध्यमिक कक्षाओं में अध्यापक की भूमिका उचित वातावरण के निर्माण में सहायकहोनी चाहिए। भाषा और साहित्य की पढ़ाई में इस बात पर ध्यान देने की जरूरत होगी कि -

- विद्यार्थी द्वारा की जा रही गलतियों को भाषा के विकास के अनिवार्य चरण के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी अबाध रूप से बिना झिझक के लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति करने में उत्साह का अनुभव करें। विद्यार्थियों पर शुद्धि का ऐसा दबाव नहीं होना चाहिए कि वे तनावग्रस्त माहौल में पड़ जाएँ। उन्हें भाषा के सहज, कारगर और रचनात्मक रूपों से इस तरह परिचित कराना उचित है कि वे स्वयं सहजरूप से भाषा का सृजन कर सकें।
- विद्यार्थी स्वतंत्र और अबाध रूप से लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति करे। अधिगम बाधित होने पर अध्यापक, अध्यापन शैली में परिवर्तन करें।
- ऐसे शिक्षण-बिंदुओं की पहचान की जाए जिससे कक्षा में विद्यार्थी निरंतर सक्रिय भागीदारी करें और अध्यापक भी इस प्रकिया में उनका साथी बने।
- हर भाषा का अपना व्याकरण होता है। भाषा की इस प्रकृति की पहचान कराने में परिवेशगत और पाठगत संदर्भों का ही प्रयोग करना चाहिए। यह पूरी प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए कि विद्यार्थी स्वयं को शोधकर्ता समझे तथा अध्यापक इसमें केवल निर्देशन करें।
- हिंदी में क्षेत्रीय प्रयोगों, अन्य भाषाओं के प्रयोगों के उदाहरण से यह बात स्पष्ट की जा सकती है कि भाषा अलगाव में नहीं बनती और उसका परिवेश अनिवार्य रूप से बहुभाषिक होता है।
- भिन्न क्षमता वाले विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शिक्षण-सामग्री का इस्तेमाल किया जाए तथा किसी भी प्रकार से उन्हेंअन्य विद्यार्थियों से कमतर या अलग न समझा जाए।

- कक्षा में अध्यापक को हर प्रकार की विविधताओं (लिंग, जाति, वर्ग, धर्म आदि) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील वातावरण निर्मित करना चाहिए।
- काव्य भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए जरूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की लयबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो-वीडियो कैसेट तैयार किए जाएँ। अगर आसानी से कोई गायक/गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन-शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।
- रा.शै.अ. और प्र. प.,(एन.सी.ई.आर.टी.) मानव संसाधन विकास मंत्रालय के विभिन्न संगठनों तथा स्वतंत्र निर्माताओं द्वारा उपलब्ध कराए गए कार्यक्रम/ ई-सामग्री वृत्तचित्रों और फीचर फिल्मों को शिक्षण-सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की जरूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के जरिए सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग कि विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग-अलग छटा दिखाई जा सकती है।
- कक्षा में सिर्फ पाठ्यपुस्तक की उपस्थिति से बेहतर होगा कि शिक्षक के हाथ में तरह-तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देखें और कक्षा में अलग-अलग मौकों पर शिक्षक उनका इस्तेमाल करें।
- भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में इनके इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुँचकर संतुष्ट होने की जगह वे सटीक अर्थ की खोज करने के लिए प्रेरित होंगे। इससे शब्दों की अलग-अलग रंगत का पता चलेगा, वे शब्दों के सूक्ष्म अंतर के प्रति और सजग हो पाएँगे।

श्रवण व वाचन (मौखिक बोलना) संबंधी योग्यताएँ

श्रवण (सुनना) कौशल

- वर्णित या पठित सामग्री, वार्ता, भाषण, परिचर्चा, वार्तालाप, वाद-विवाद, कविता-पाठ आदि का सुनकर अर्थ ग्रहण करना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को जानना।
- वक्तव्य के भाव, विनोद व उसमें निहित संदेश, व्यंग्य आदि को समझना।
- वैचारिक मतभेद होने पर भी वक्ता की बात को ध्यानपूर्वक, धैर्यपूर्वक व शिष्टाचारानुकूल प्रकार से सुनना व वक्ता के दृष्टिकोण को समझना।
- ज्ञानार्जन मनोरंजन व प्रेरणा ग्रहण करने हेतु सुनना।
- वक्तव्य का आलोचनात्मक विश्लेषण करना एवं सुनकर उसका सार ग्रहण करना।

श्रवण (सुनना) वाचन (बोलना) का परीक्षण : कुल 10 अंक(5+5)

- श्रवण (सुनना) (5अंक): वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करना, वार्तालाप करना, वाद-विवाद, भाषण, कवितापाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को समझना।

- वाचन (बोलना) (5अंक): भाषण, सस्वर कविता-पाठ, वार्तालाप और उसकी औपचारिकता, कार्यक्रम-प्रस्तुति, कथा-कहानी अथवा घटना सुनाना, परिचय देना, भावानुकूल संवाद-वाचन।

टिप्पणी: वार्तालाप की दक्षताओं का मूल्यांकन निरंतरता के आधार पर परीक्षा के समय ही होगा। निर्धारित 10 अंकों में से 5 श्रवण (सुनना) कौशल के मूल्यांकन के लिए और 5 वाचन (बोलना) कौशल के मूल्यांकन के लिए होंगे।

- परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 100-150 शब्दों का होना चाहिए।

  या

  परीक्षक 1-2 मिनट का श्रव्य अंश (ऑडियो क्लिप) सुनवाएगा। अंश रोचक होना चाहिए। कथ्य /घटना पूर्ण एवं स्पष्ट होनी चाहिए। वाचक का उच्चारण शुद्ध, स्पष्ट एवं विराम चिह्नों के उचित प्रयोग सहित होना चाहिए।
- परीक्षार्थी ध्यान पूर्वक परीक्षा/आडियो क्लिप को सुनने के पश्चात परीक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का अपनी समझ से मौखिक उत्तर देंगे।

कौशलों के मूल्यांकनका आधार

	श्रवण (सुनना)		**वाचन(बोलना)**
1	विद्यार्थी में परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है।	1	विद्यार्थीकेवल अलग-अलग शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है।
2	छोटे सुसंबद्धकथनों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है।	2	परिचित संदर्भों में केवल छोटे सुसंबद्ध कथनों का सीमित शुद्धता से प्रयोग करता है।
3	परिचित या अपरिचित दोनों संदर्भों में कथित सूचना को स्पष्ट समझने की योग्यता है।	3	अपेक्षित दीर्घ भाषण में जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है।
4	दीर्घ कथनों की श्रृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझता है और निष्कर्ष निकाल सकता है।	4	अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित कर धारा प्रवाह रूप में प्रस्तुत कर सकता है।
5	जटिल कथनों के विचार-बिंदुओं को समझने की योग्यता प्रदर्शित करता है।	5	उद्देश्यऔर श्रोता के लिए उपयुक्त शैली को अपना सकता है।

टिप्पणी

- परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को तैयारी के लिए कुछ समय दिया जाए।
- विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
- निर्धारित विषय परीक्षार्थी के अनुभव संसार के हों, जैसे - कोई चुटकुला या हास्य-प्रसंग सुनाना, हाल में पढ़ी पुस्तक या देखे गए सिनेमा की कहानी सुनाना।

- जब परीक्षार्थी बोलना प्रारंभ करें तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

परियोजना कार्य - **कुल अंक 10**

· विषय वस्तु	-	5 अंक
· भाषा एवं प्रस्तुति	-	3 अंक
· शोध एवं मौलिकता	-	2 अंक

- हिन्दी भाषा और साहित्य से जुड़े विविध विषयों/ विधाओं / साहित्यकारों / समकालीन लेखन / साहित्यिक वादों / भाषा के तकनीकी पक्ष / प्रभाव / अनुप्रयोग / साहित्य के सामाजिक संदर्भों एवं जीवन मूल्य संबंधी प्रभावों आदि पर परियोजना कार्य दिए जाने चाहिए।
- सत्र के प्रारंभ में ही विद्यार्थी को विषय चुनने का अवसर मिले ताकि उसे शोध, तैयारी और लेखन के लिए पर्याप्त समय मिल सके ।

पठन कौशल

- सरसरी दृष्टि से पढ़कर पाठ का केंद्रीय विचार ग्रहण करना।
- एकाग्रचित हो एक अभीष्ट गति के साथ मौन पठन करना।
- पठित सामग्री पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना।
- भाषा, विचार एवं शैली की सराहना करना।
- साहित्य के प्रति अभिरूचि का विकास करना।
- साहित्य की विभिन्न विधाओं की प्रकृति के अनुसार पठन कौशल का विकास।
- संदर्भ के अनुसार शब्दों के अर्थ-भेदों की पहचान करना।
- सक्रिय (व्यवहारोपयोगी) शब्द भंडार की वृद्धि करना।
- पठित सामग्री के विभिन्न अंशों का परस्पर संबंध समझना।
- पठित अनुच्छेदों के शीर्षक एवं उपशीर्षक देना।
- कविता के प्रमुख उपादान यथा - तुक, लय, यति,गति, बलाघातआदि से परिचित कराना।

लेखन कौशल

- लिपि के मान्य रूप का ही व्यवहार करना।
- विराम-चिह्नों का उपयुक्त प्रयोग करना।
- प्रभावपूर्ण भाषा तथा लेखन-शैली का स्वाभाविक रूप से प्रयोग करना।
- उपयुक्त अनुच्छेदों में बाँटकर लिखना।
- प्रार्थना पत्र, निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र, संवेदना पत्र,ई-मेल,आदेश पत्र, एस.एम.एस आदि लिखना और विविध प्रपत्रों को भरना।
- विविध स्रोतों से आवश्यक सामग्री एकत्र कर अभीष्ट विषय पर निबंध लिखना।
- देखी हुई घटनाओं का वर्णन करना और उन पर अपनी प्रतिक्रिया देना।
- हिन्दी की एक विधा से दूसरी विधा में रूपांतरण का कौशल।

- समारोह और गोष्ठियों की सूचना और प्रतिवेदन तैयार करना।
- सार, संक्षेपीकरण एवं भावार्थ लिखना।
- गद्य एवं पद्य अवतरणों की व्याख्या लिखना।
- स्वानुभूत विचारों और भावनाओं को स्पष्ट सहज और प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करना।
- क्रमबद्धता और प्रकरण की एकता बनाए रखना।
- लिखने में मौलिकता और सृजनात्मकता लाना।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

अनुच्छेद लेखन

- पूर्णता - संबंधित विषय के सभी पक्षों को अनुच्छेद के सीमित आकार में संयोजित करना
- क्रमबद्धता - विचारों को क्रमबद्ध एवं तर्कसंगत विधि से प्रकट करना
- विषय-केन्द्रित - प्रारंभ से अंत तक अनुच्छेद का एक सूत्र में बंधा होना
- समासिकता - सीमित शब्दों में यथासंभव पूरी बात कहने का प्रयास, अनावश्यक बातें न करके केवल विषय संबद्ध वर्णन-विवेचन

पत्र लेखन

- अनौपचारिक पत्र विचार-विमर्श का जरिया जिनमें मैत्रीपूर्ण भावना निहित, सरलता, संक्षिप्त और सादगी के साथ लेखन शैली
- औपचारिक पत्रों द्वारा दैनंदिनी जीवन की विभिन्न स्थितियों में कार्य, व्यापार, संवाद, परामर्श, अनुरोध तथा सुझाव के लिए प्रभावी एवं स्पष्ट संप्रेषण क्षमता का विकास
- सरल और बोलचाल की भाषाशैली, उपयुक्त, सटीक शब्दों के प्रयोग, सीधे-सादे ढंग से स्पष्ट और प्रत्यक्ष बात की प्रस्तुति
- प्रारूप की आवश्यक औपचारिकताओं के साथ सुस्पष्ट, सुलझे और क्रमबद्ध विचार आवश्यक तथ्य, संक्षेप और सम्पूर्णता के साथ प्रभावान्विति

विज्ञापन लेखन

विज्ञापित वस्तु / विषय को केंद्र में रखते हुए

- विज्ञापित वस्तु के विशिष्ट गुणों का उल्लेख
- आकर्षक लेखन शैली
- प्रस्तुति में नयापन, वर्तमान से जुड़ाव तथा दूसरों से भिन्नता
- विज्ञापन में आवश्यकतानुसार नारे (स्लोगन) का उपयोग
- (विज्ञापन लेखन मे बॉक्स, चित्र अथवा रंग का उपयोग अनिवार्य नहीं)

संवाद लेखन

दो या दो से अधिक लोगों के बीच होने वाले वार्तालाप/ बातचीत विषय, काल्पनिक या किसी वार्ता को सुनकर यथार्थ पर आधारित संवाद लेखन की रचनात्मक शक्ति का विकास, कहानी, नाटक, फिल्म और टीवी सीरियल से लें।

- पात्रों के अनुकूल भाषा शैली
- शब्द सीमा के भीतर एक दूसरे से जुड़े सार्थक और उद्देश्यपूर्ण संवाद
- वक्ता के हाव-भाव का संकेत
- संवाद लेखन के अंत तक विषय/मुद्दे पर वार्ता पूरी

लघु-कथा लेखन (दिए गए प्रस्थान बिंदु के आधार पर लघु कथा लेखन)

- निरंतरता
- कथात्मकता
- प्रभावी संवाद/ पात्रानुकुल संवाद
- रचनात्मकता/कल्पना शक्ति का उपयोग
- जिज्ञासा/रोचकता

संदेश लेखन (शुभकामना, पर्व-त्यौहारोंएवं विशेष अवसरों पर दिए जाने वाले संदेश)

- विषय से संबद्धता
- संक्षिप्त और सारगर्भित
- भाषाई दक्षता एवं प्रस्तुति
- रचनात्मकता/सृजनात्मकता

हिंदी पाठ्यक्रम - अ (कोड सं. - 002)
कक्षा 9वीं हिंदी अ - परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2020-21

परीक्षा भार विभाजन					
	विषयवस्तु			उप भार	कुल भार
1	अपठित गद्यांश (चिंतन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल पर) अति लघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।				10
	एक अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के) (1x2=2) (2x4=8)			10	
2	व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु /संरचना आदि पर प्रश्न (1x16)				16
	व्याकरण				
	1	शब्द निर्माण उपसर्ग - 2 अंक, प्रत्यय - 2 अंक, समास - 4 अंक		8	
	2	अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद - 4 अंक		4	
	3	अलंकार-(शब्दालंकार: अनुप्रास, यमक, श्लेष) (अर्थालंकार : उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण)		4	
3	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग - 1 व पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग -1				34
	अ	गद्य खंड		14	
		1	क्षितिज से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषय-वस्तु का ज्ञान बोध, अभिव्यक्ति आदि पर तीन प्रश्न पूछे जाएंगे। (2x3)	6	
		2	क्षितिज से निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की उच्च चिंतन क्षमताओं एंव अभिव्यक्ति का आकलन करने हेतु चार प्रश्न पूछे जाएंगे। (2x4) (विकल्प सहित)	8	
	ब		काव्य खंड	14	
		1	क्षितिज से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर तीन प्रश्न पूछे जाएंगे (2x3)	6	
		2	क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु चार प्रश्न पूछे जाएंगे। (2x4) (विकल्प सहित)	8	
	स	पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग - 1		6	
		कृतिका के निर्धारित पाठों पर आधारित दो प्रश्न पूछे जाएँगे (विकल्प सहित)। (3x2)		6	
4	लेखन				

	अ	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों में से किन्हीं तीन विषयों पर 80 से 100 शब्दों में किसी एक विषय पर अनुच्छेद (5x1)	5	20
	ब	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र। (5x1)	5	
	स	किसी एक विषय पर संवाद लेखन। (5x1) (विकल्प सहित)	5	
	द	लघु-कथा लेखन (दिए गए प्रस्थान बिंदु के आधार पर 100-120 शब्दों में) (विकल्प सहित)	5	
		कुल		80
5	(क)	श्रवण तथा वाचन		10
	(ख)	परियोजना		10
		कुल अंक		**100**

निर्धारित पुस्तकें :

1. **क्षितिज, भाग-1,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
2. **कृतिका, भाग-1,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

कक्षा नौवीं

नोट - पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं -

क्षितिज, भाग - 1	काव्य खंड	• कबीर - साखियाँ व सबद पाठ से सबद-2 • सुमित्रानंदन पंत - ग्राम श्री • केदारनाथ अग्रवाल - चंद्रगहना से लौटती बेर • सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - मेघ आए • चंद्रकांत देवताले - यमराज की दिशा
	गद्य खंड	• श्यामाचरण दूबे - उपभोक्तावाद की संस्कृति • चपला देवी - नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया • महादेवी वर्मा - मेरे बचपन के दिन • हज़ारीप्रसाद द्विवेदी - एक कुत्ता और एक मैना
कृतिका, भाग - 1	• फणीश्वरनाथ रेणु - इस जल प्रलय में • शमशेर बहादुर सिंह - किस तरह आखिरकार मैं हिंदी में आया	